बारह ज्योतिर्लिंग

- 'ज्योति' का शाब्दिक अर्थ है - 'प्रकाश' और 'लिंग' से अभिप्राय है - 'शिवलिंग', जिसे भगवान् शिव का प्रतीक (sign or symbol) माना जाता है। अतः 'ज्योतिर्लिंग' का अर्थ हुआ 'प्रकाश-मय शिवलिंग' या 'विशेष महिमा वाले शिवलिंग'।
- ऐसी धारणा है की ज्योतिर्लिंग स्वयंभू (स्वयं ही उत्पन्न) हैं, जबकि अन्य शिवलिंग मानव द्वारा स्थापित और स्वयंभू दोनों हो सकते हैं।
- स्थानीय मान्यताओं को आधार माना जाए तो इस समय भारत में 24 से भी अधिक ज्योतिर्लिंग दिखाई और सुनाई देते हैं। परन्तु आदि शंकराचार्य जी द्वारा रचित "द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग स्तोत्रम्" में केवल 'द्वादश' अर्थात बारह शिवलिंगों को ही यह गरिमा प्राप्त है।
- इन बारह में से प्रत्येक ज्योतिर्लिंग की स्थापना की कथा और महिमा 'शिव-पुराण' की 'कोटि-रुद्र संहिता' में दी गई है।
- "द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग स्तोत्रम्" के निम्नलिखित चार श्लोकों में इन बारह ज्योतिर्लिंगों के नाम व स्थान (locations) तथा उनकी सामूहिक महिमा संक्षेप में दिए गए हैं –

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् । उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम् ॥१॥
परल्यां वैद्यनाथम् च डाकिन्यां भीमशङ्करम् । सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥२॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे । हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये ॥३॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः । सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥४॥

अर्थात - सौराष्ट्र में सोमनाथ और श्रीशैल पर मल्लिकार्जुन, उज्जैन में महाकाल, ओंकार-ममलेश्वर; परली में वैद्यनाथ और डाकिनी में भीमशङ्कर, सेतुबन्ध में रामेश (रामेश्वर) और दारुका-वन में नागेश; वाराणसी में विश्वेश (विश्वनाथ), गौतमी के तट पर त्र्यम्बक (त्र्यम्बकेश्वर); हिमालय में केदार (केदारनाथ) और शिवालय में घुश्मेश (घुश्मेश्वर)। जो मनुष्य इन ज्योतिर्लिंगों का नाम सुबह और शाम को जपता है, उसके पिछले सात जन्मों में किये पापों का विनाश हो जाता है।

- उपरोक्त बारह ज्योतिर्लिंगों के नाम और उनकी स्थिति (स्थान व राज्य के वर्तमान नाम) उपरोक्त क्रम में ही नीचे दिए गए हैं, इनमें से कुछ नामों अथवा स्थानों को लेकर मतभेद हो सकते हैं -

1. **सोमनाथ ज्योतिर्लिंग:** गुजरात राज्य के सौराष्ट्र क्षेत्र के वेरावल में विराजमान यह पृथ्वी का प्रथम ज्योतिर्लिंग है।
2. **मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग:** यह ज्योतिर्लिंग भ्रमरांबा शक्तिपीठ के साथ श्रीसैलम (आंध्र प्रदेश राज्य) में स्थित है।
3. **महाकाल या महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग:** यह मध्य प्रदेश के उज्जैन में विराजमान है।

4. **ओंकारेश्वर व ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग:** दोनों शिवलिंगों की गणना एक ही ज्योतिर्लिंग में की जाती है। दोनों मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में नर्मदा नदी पर विराजमान हैं। ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग नर्मदा नदी के मध्य ओंकार पर्वत पर जबकि ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग नर्मदा के दक्षिणी तट पर स्थित है। ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग का प्राचीन नाम अमरेश्वर महादेव है। संभवतः वर्षा ऋतु में बाढ़ के समय जब ओंकारेश्वर पहुंचना संभव ना होता होगा, तब अमरेश्वर महादेव के दर्शन से ही धर्मावलंबी संतुष्ट होते होंगे।
5. **वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग:** यह महाराष्ट्र के बीड जिला में परली ग्राम के निकट विराजमान है।
6. **भीमशंकर या भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग:** यह महाराष्ट्र राज्य में पुणे के निकट खेड़ तालुका में भीमा नदी के किनारे सह्याद्रि पर्वत-श्रृंखला पर स्थित है। खेड़ तालुका को डाकिनी क्षेत्र भी कहते हैं, जिसका उल्लेख उपरोक्त श्लोक संख्या-2 में है।
7. **रामेश्वर ज्योतिर्लिंग:** यह तमिलनाडु राज्य के रामेश्वरम् शहर में है। इसकी स्थापना भगवान् श्रीराम ने लंका के लिए कूच करने से पहले की थी। यह सनातन धर्म के चार धामों में से एक धाम भी है। रामेश्वर तीर्थ को ही सेतुबन्ध तीर्थ कहा जाता है, जिसका उल्लेख उपरोक्त श्लोक संख्या-2 में है।
8. **नागेश्वर ज्योतिर्लिंग:** यह गुजरात में द्वारका के समीप स्थित है। इस स्थान को दारुका-वन भी कहा जाता है, जिसका उल्लेख उपरोक्त श्लोक संख्या-2 में है। ।
9. **विश्वनाथ या विश्वेश्वर ज्योतिर्लिंग:** यह उत्तर प्रदेश के वाराणसी (काशी) में विराजमान है।
10. **त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग:** यह महाराष्ट्र के नासिक ज़िले में गोदावरी नदी के किनारे त्र्यम्बक में है। गोदावरी नदी का एक पौराणिक नाम गौतमी है, जिसका उल्लेख उपरोक्त श्लोक संख्या-3 में है।
11. **केदारनाथ या केदारेश्वर ज्योतिर्लिंग:** यह उत्तराखंड में हिमालय के केदार नामक पर्वत-शिखर पर है।
12. **घुश्मेश या घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग:** यह राजस्थान राज्य के जिला सवाई माधोपुर में देवगिरि पर्वत श्रृंखला में शिवाड़ नामक स्थान पर है, जो जयपुर से लगभग 100 किलोमीटर दूर है। ज्योतिर्लिंग की वेबसाइट https://ghushmeshwar.com के अनुसार इस स्थान का प्राचीन नाम 'शिवालय' था (जिसका उल्लेख उपरोक्त श्लोक संख्या-3 में है), जो बाद में 'शिवाल' और फिर 'शिवाड़' हो गया।